RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

प्रयोजनमूलक हिन्दी के विकास में अनुवाद की भूमिका

डॉ. गीता सहाय

हिन्दी विभाग गया कालेज,गया

प्रयोजनमूलक हिन्दी के संदर्भ में "प्रयोजन" से तात्पर्य है उद्देश्य अथवा प्रयुक्त (purpose of use)। 'प्रयोजन' का संबंध भाषा में उसकी प्रयोजनीयता (Applicability) से जुड़ा हुआ है। प्रयोजनमूलक हिन्दी, अंग्रेजी शब्द "फंक्शनल हिन्दी'' का पर्याय है। श्री मोटूरी सत्यनारायण जो प्रयोजनमूलक हिन्दी के जनक माने जाते हैं,प्रयोजनमूलक विशेषण का पक्ष लेकर, इस प्रयोगातमक भाषा का स्वरूप स्पष्ट करते हुए बताते हैं – "जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लाई जानेवाली हिन्दी ही प्रयोजनमूलकहिन्दी" है । । आपका मत है कि व्यावहारिक हिन्दी में हिन्दी के व्यावहारिक व्याकरण को पर्याप्त स्थान मिला है। लेकिन 'फंक्शनल हिन्दी ' में केवल व्यावहारिक व्याकरण ही नहीं, अपितु आज क उदारवादी एवं बहुराष्ट्रीय परिवार के कामकाज में आनेवाली भारतीयभाषा का स्वरूप है । दूसरी ओर व्यावहारिक हिन्दी का व्यवहार क्षेत्र सीमित है।

यह दैनिक जीवन से जुड़ा हुआ है द्य इसमें पारिभाषिक शब्दावली, विशिष्ट पद विन्यास और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी को अभिव्यक्त करने की क्षमता स्पष्टतः नहीं है । लेकिन प्रयोजनमूलक हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली, भाषिक संरचना एवं अनुप्रयुक्तता के साथ आधुनिक ज्ञान विज्ञान के सभी क्षेत्रों को रूपायित करने कीदक्षता भी दृष्टिगत होते है । इस दृष्टि से प्रयोजनमूलक हिन्दी कीव्याख्या होगी – "प्रयोजनमूलक हिन्दी से तात्पर्य है, हिन्दी का वह प्रयुक्तिपरक विशिष्ट रूप जो विषयगत, भूमिकागत तथा संदर्भगतप्रयोजन के लिए विशिष्ट भाषिक संरचना द्वारा प्रयुक्त किया जाता है, और जो सरकारी प्रशासन तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अनेकविधि क्षेत्रों को अभिव्यक्त प्रदा करने में सक्षम सिद्ध होता है"। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी है । हिन्दी को राजभाषा का अधिकार मिलने का प्रमुख कारण यह है कि जन संपर्क की भाषा के रूप में इसका सबसे अधिक प्रसार है । हिन्दी की इस मान्यता के कारण केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में प्रशासनिक रूप में हिन्दी का प्रयोग हो रहा है । इसके साथ साथ प्रशासन, कार्यालय, जनसंचार माध्यम, विधि जैसे प्रतिष्ठित क्षेत्रों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग होने लगा । प्रयोजन मूलक रूप हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में भूमिका अदा कर रही है ।

प्रयोजनमूलक हिन्दी की संरचना का महत्वपूर्ण तत्व है – अनुवाद । हिन्दी के राजभाषा के पद पर आसीन होने के पश्चात उसके प्रयोजनमूलक रूप में अनुवाद एक जरूरी एवं अनिवार्य उपकरण बनकर उभरा । प्रस्तुत लेख में अनुवाद के प्रमुख प्रयोग क्षेत्र और उसकी प्रायोगिक विशिष्ट्ता और समस्याओं की ओर इशारा किया गया है ।

प्रशासनिक अनुवाद

प्रशासनिक साहित्य में सरकार एवं प्रशासन के कार्यवृत्तों का विवरण और विवेचन होता है । प्रशासनिक भाषा के अनुवाद मैं सरकार के सारे विभागों के लिए होनेवाले – सरकारी सेवा नियम, सरकारी वित्त नियम आदि के संकलन को शुद्ध प्रशासनिक, वैधानिक आधार पर करना पड़ता है । जो कुछ कहा जाता है, उसका स्पष्ट और सीधाअर्थ स्पष्ट करना अनिवार्य है । प्रशासन के नेमी पत्र व्यवहार के कुछ नियमित साँचे अंग्रेजी में बने हुए है । कार्यालय आदेश, ज्ञापन, परिपत्र, अधिसूचना, कारनामा आदि इनमें महत्वपूर्ण हैं । इनमें संकेतित शब्द, संकेतित वाक्यांश, नियत अभिव्यक्तियाँ, और नियत संरचनाएँ होती है और सामान्य व्याकरणिक प्रक्रिया के नियमों का पालन नहीं करते, इसलिए इनके प्रामाणिक अनुवाद मैं दक्षता पाना प्रशासनिक हिन्दी में पत्र व्यवहार के लिए आवश्यक है । अँग्रेजी संकेतित शब्दों के लिए हिन्दी अनुवाद के कुछ उदाहरण :–

Affidavit– शपथ पत्र
Appropriation – विनियोजन
Days of Grace– रियायती दिन
Linked file – संलग्न फाइल

प्रशासन में सांकेतिक शब्द और सामान्य शब्द दोनों प्रयुक्त होते हैं । विभागों के अनुसार शब्दों का अर्थ बदलता है ।

उदाः– Balance – तराजू, संतुलन, शेष, बकाया
Bill– बीजक, विधेयक, विज्ञापन, विवरण,
Section– धारा, अनुभाग, खंड, विभाग

प्रशासनिक क्षेत्र में प्रत्येक पारिभाषिक शब्द की अलग सैद्धांतिक संकल्पना है, और हर शब्द विशेष प्रयोजन के लिए होता है, इसलिए उनमें सूक्ष्म अर्थाभिव्यक्ति होती है

कार्यालयीन अनुवाद

सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होनेवाली भाषा कार्यालयीन कही जाती है। इसे ही "प्रशासनिक हिन्दी" प्रयोजनमूलक हिन्दी भी कहा जाता है । यही हिन्दी सही अर्थों में राजभाषा है। (प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप, डॉ. राजेश मिश्र,राकेश शर्मा) इस तरह की हिन्दी में कार्यालय और प्रशासन से संबन्धित शब्दों की अधिकता होती है। सरकार ने सरकारी काम के लिए प्रयोजनपरक शब्दावलियों का निर्माण करवाया गया है ।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कार्यालयीन हिन्दी पर चर्चा करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि मूल सामाग्री किस कार्यात्रय से जुड़ा हुआ है, ताकि प्रत्येक विभाग के संचालन के लिए बनाई गयी संहिता, नियमावली, कोड, मैनुअल आदि भिन्न होते है ।इसलिए इसकी शब्दावली भी भिन्न होती है । इसलिए कार्यात्रयी सामाग्री का अँग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते समय विषय का पूर्ण ज्ञान, मूल भाषा और लक्ष्य भाषा पर समान अधिकार, सरल, स्पष्ट और ल्रघु वाक्यों का प्रयोग, उपयुक्त व सटीक शब्दों का चयन , अँग्रेजी के बहुप्रचलित शब्दों का लिप्यंतरण, शब्द प्रयोजन का विशेष ध्यान अनिवार्य है ।

Capital Expenditure (अँग्रेजी शब्द), राजधानी खर्च (शब्दानुवाद)

पूंजीगत व्यय (सही अनुवाद)

The official Language Committee divided –राजभाषा समिति में विभाजन हुआ(हिन्दी अनुवाद)

Report (अंगेजी शब्द)–प्रतिवेदन,विवरण, (हिन्दी समतुल्य), प्रतिवेदन (मानक शब्द)

Broken Account (अंग्रेजी के पद), टूटा हुआ खाता (शब्दानुवाद), खंडित खाता (सही अनुवाद)

कार्यालय में अक्सर प्रयुक्त होनेवाले कुछ शब्द

1. मामला :किसी चालू मिसिल अथवा अन्य संबन्धित कागज्जत की आवती से है ,
2. मिसिल – फाइल
3. प्रेषणः issue किसी मामले में जारी किए गए पत्र से है ।
4. प्रवरण पत्र : covering letter
5. अनुमोदन : approval
6. अग्रेषित : forwarded

बैंक क्षेत्र में अनुवाद

समाज में जैसे जैसे विविधता, औद्योगीकरण एवं विशिष्टीकरण की मांग बढ़ती गई, बैंकिंग का क्षेत्र भी उसी के अनुरूप व्यापक होता गया । बैंकिंग आज किसी भी सरकार का एक बहुत बड़ा दायित्वपूर्ण विभाग बन गया है, जिसके जरिये उस देश की आंतरिक बाहय अर्थ व्यवस्था का मूल्यांकन किया जाता है ।

बैंकिंग के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग मुख्य रूप से दो स्तरों पर होता है – एक राजभाषा संबंधी संवैधनिक दायित्वों के अनुपालन के स्तर पर और दूसरा जनभाषा के स्तर पर । राजभाषा पक्ष के अनुपालन के सभी बैंकों में राजभाषा विभाग खोले गए हैं और नियुक्त हिन्दी अधिकारी ,अनुवादक आदि बैंकिंग साहित्य के अँग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद का कार्य करते हैं । बैंकिंग अनुवाद के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि बैंकिंग परिचालन की मूल अवधारणा से परिचित हो । बैंकिंग क्षेत्र की शब्दावली एक निश्चित दायरे की होती हैं और इसका कार्य व्यापार पूर्व से तैयार किए गए प्रपत्रों में आवश्यकतानुसार सूचना और प्रविष्टियां भर कर सम्पन्न होता है ।

Account –खाता, Deposit–जमा,Withdrawal – वापसी ,

Saving Account – बजत खाता

बैंकिंग साहित्य के अनुवाद में हिन्दी की वाक्य रचना पर अंग्रेजी वाक्य रचना का प्रभाव व्यापक रूप से पाया जाता है । इससे वाक्यों में सुधार करना भी मुश्किल हो जाता है । अंग्रेजी के छोटे वाक्यों के अनुवाद पर भी उसकी वाक्य रचना का प्रभाव देखा जा सकता है । जैसे –

The signature which appear below is duly confirmed by me (अंगेजी अनुवाद)

मैं उनके हस्ताक्षर का पुष्टीकरण करता हूँ जो नीचे दिया गया है । (गलत)

उनके नीचे दिये गए हस्ताक्षर की मैं विधिवत पुष्टि करता हूँ । (या)
मैं उनके हस्ताक्षर का पुष्टिकरण करता हूँ । सही

बैंकों में जो अनुवाद कार्य किया जाता है, वह साहित्यि अनुवाद से पूरी तरह भिन्न होता है । बैंकों में अनुवाद कार्य कार्यालय अनुवाद की श्रेणी में आता है । बैंकों में अनुवाद विषयानुकूल होता है, एवं मूल अभिव्यक्ति का अनुवाद होता है । बैंकों में मुख्यतः दस्तावेजों फार्मों,परिपत्रों, विज्ञापनों, करारों, अनुबंधों एवं ग्राहकों से संबन्धित सूचनाओं का अनुवाद कार्य किया जाता है । इसप्रकार के अनुवाद में अत्यंत आवश्यक है कि स्त्रोत भाषा के शब्दों का अर्थ प्राप्त करने के लिए,बैंकिंग से संबन्धित 'पारिभाषिक शब्दावली' का प्रयोग किया जाए । जनसंचार माध्यमों का अनुवाद

प्रिंट मीडिया में अनुवाद

प्रिंट मीडिया जहां एक निश्चित समय अंतराल से पाठक तक पहुँचती है, वहीं उसमें हर समय और हर कहीं निरंतर पहुँचते रहने की क्षमता है । इस विशेषता के कारण ही प्रिंट मीडिया की प्रासंगिकता बनी हुई है । समाचार माध्यमों का अनुवाद साहित्यिक अनुवाद से भिन्न होता हैं । समाचार माध्यमों में मूल पाठ का सारानुवाद या भावानुवाद ही किया जाता है । अनुवाद की शैली रोचकता से पूर्ण होनी चाहिएजिससे पाठक समाचार पढ़ने या सुनने के लिए बाध्य हो सके । अनुवादक को लक्ष्य भाषा के वाक्य विन्यास और उसकी प्रकृति को पूरी तरह समझना अनिवार्य है । समाचार माध्यमों का अनुवाद की भाषा सहज, सरल, और सर्वग्राही होना चाहिए । अनुवादक को लक्ष्य भाषा के वाक्य विन्यास और उसकी प्रकृति को पूरी तरह समझना चाहिए । विशेष रूप से जहां तक हिन्दी का प्रश्न है, हिन्दी का स्वभाव और प्रकृति अँग्रेजी से पूरी तरह भिन्न हैं । इसलिए अनुवादक का कर्तव्य है कि वह हिन्दी के मूल स्वभाव को समझकर ही अनुवाद करें ।

इलेक्टनिक मीडिया

इलाक्त्रोनिक संचार माध्यम में मुख्य तौर पर टेलीविजन और रेडियो को रखा जाता है। टेलीविजन आज सबसे सशक्त माध्यम है और इसमें भाषा का अनुवाद और रूपान्तरण किया जाता है । टेलीविजन ने भाषा के स्तर पर अनेक प्रयोग किए हैं । सभ्य और विकसित समाज की भाषा अलग होती है और आंचलिक भाषा उससे अलग । भाषाई अनुवाद के स्तर पर जब भाषा का रूपान्तरण होता है,तो उनका शब्द जब तक स्पष्ट न हो उस अनुवाद को सफल नहीं माना जा सकता। ध्वनि और दृश्य के अभिनय का एक

RRIJM 2015, All Rights Reserved

स्वरूप टेलिविशन की भाषा में स्पष्ट अंकित होता है । अनुवाद की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि वह विभिन्न कार्यक्रमों को प्रयोजनमूलक सम्बन्धों से जोड़ती है । टेलीविजन में कई कार्यक्रम डब भी किए जाते हैं । टेलीविजन की भाषा का अनुवाद में अत्यंत सतर्कता और सृजनात्मकता की आवश्यकता होती है । रेडियो के विभिन्न प्रोग्राम्म मूल भाषा से लक्ष्य भाषा में या तो मानक रूप में या समाचार की प्रवृत्ति के अनुसार आंचलिक भाषा के रूप में प्रयोग में आते हैं । रेडियो की भाषा प्रसारण की भाषा है, और वह सीधा सीधा अनुवाद करती है । रेडियो घरों में अकेलापन दूर करता है और वह तेजी से अपने प्रसारण को उयग्रह माध्यम से या टेलीफोने लाईनों से और अब डिजिटल तकनीकों से प्रसारित कर देता है । इसलिए इसकी गतिशील होती है और एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है ।

वाणिज्यानुवादः–

प्रत्येक व्यक्ति और समाज के लिए ही नहीं, प्रत्येक राष्ट्र के लिए वाणिज्य क्षेत्र का अपना विशेष महत्व है । प्रत्येक देश के विकास में वाणिज्या की भूमिका इसलिए प्रत्येक समाचार पत्र में बाजार की हलचल का ब्यौरा छपता है । कुछ वाणिज्या शब्दों के अर्थ इसप्रकार होता है –

नरम पड़ना – दामों की कमी आना, घटना,

भडकना – बहुत बढ़ जाना

मुंह के बल गिरना – भावों के अचानक कमी होना ।

वाणिज्यिक क्षेत्र में अधिकतर कार्य

स्वतन्त्रता के बाद वाणिज्यिक क्षेत्र में अनेक पारिभाषिक शब्द का मानकीकरन हुआ है । इनमें कुछ शब्द अंग्रेजी और विदेशी भाषाओं से भी आए हैं । जैसे रॉयल्टी , बोनस, शेयर, कमीशन और बजट । कुछ द्विभाषिक शब्दों का भी प्रचलन है जैसे

Undertaking : उपक्रम

Corporation : निगम

Investment : निवेश

Project : परियोजना

सही बात यही है कि वाणिज्य प्रक्रिया जनता से अलग नहीं होती इसलिए अनुवाद का कार्य बढ़ता जा रहा है । लेकिन इस क्षेत्र में भीअँग्रेजी का वर्चस्व बना हुआ है विशेष रूप से बड़े व्यापारिक क्षेत्रों मेंअंग्रेजी का प्रयोग किया जाता है ।

निष्कर्षत : यह बताया जा सकता है हिन्दी के प्रयोजनमूलकता में अनुवाद का भी क्षेत्र है क्योंकि हिन्दी के नए विकास में अंग्रेजी सेअनुवाद की भूमिका स्वतंत्र भारत में बहुत महत्वपूर्ण हो गयी है । प्रशासन और शिक्षा के सारे शब्द जो विशेषकर तकनीकी और पारिभाषिक भी है, अनुवाद के माध्यम से ही हिन्दी में आ रहे हैं ,संसद और न्यायपालिका तथा कार्यपालिका सभी में हिन्दी का प्रयोग हो रहा है । अतः अनुवाद के विविध रूप भी इस प्रयोजनमूलक का अंग है ।

प्रयोजनमूलक रूप में हिन्दी को देश की सभी भाषाओं को जोड़ने और देश में भावात्मक एकता स्थापित करने के लिए अनेक भूमिकाओं का निर्वाह भी करना है । उसे एक ओर जहां अंग्रेजी के समानान्तर अपनी सार्थकता सिद्ध करनी है, वहीं दूसरी ओर अपनी प्रांतीय भाषाओं की अस्मिता की रक्षा करते हुए आगे बढ़ना है । इसी चेतना के साथ हिन्दी के स्वरूप का निर्माण होना चाहिए यह हमारी दृढ़ मान्यता है ।

संदर्भ ग्रंथसूची

1.प्रयोजनमूलक हिन्दीः प्रासंगिकता एवं परिदृश्य, (2003), डॉ.एस. नागलक्ष्मी , जवाहर पुस्तकालय, माथुरा,(उ. प्र)
2.प्रयोजनमूलक हिन्दी और जनसंचार ,(2010) डॉ.राजेन्द्र मिश्र, तक्षशिला प्रकाशन , नई दिल्ली
3.प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप, (2005) राजेन्द्र मिश्र, राजेश शर्मा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी दशा और दिशा, (2005), डॉ शाहिद कमर, अनंग प्रकाशन नई दिल्ली ।

RRIJM 2015, All Rights Reserved